International Journal of Sanskrit Research 2016; 2(4): 23-25

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2016; 2(4): 23-25
© 2016 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 09-05-2016
Accepted: 10-06-2016

vuh'k dqekj
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग वि. जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।

Xkà lw=ksa esa of.kZr iapegk;Kksa dk foospu

vuh'k dqekj

गृह्यसूत्रों में नित्य नैमित्तिक और काम्य आदि अनेक यज्ञों का विवेचन प्राप्त होता है, जिस प्रकार यज्ञों का वर्णन ब्राह्मण ग्रन्थों एवं वेदों में प्राप्त होता है उसी प्रकार गृहस्थ के यज्ञों का विवेचन हमें सविस्तार गृह्यसूत्रों में मिलता है। गृहस्थ के नित्य कर्मों में पंचमहायज्ञों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मनु ने इन यज्ञों द्वारा शरीर को ब्रह्मप्राप्ति के योग्य बनाने का निर्देश दिया है। [1]

शतपथ ब्राह्मण का कथन है– 'यज्' धातु से यज्ञ शब्द बनता है, जिसका अर्थ है– देवपूजा, संगतिकरण और दान। इसलिये कहा गया है कि 'अध्वरो वै यज्ञः' [2] इन शब्दों द्वारा यज्ञ का महत्त्व प्रकट किया गया है। अथर्ववेद का कहना है ''अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः'' अर्थात् भुवन की उत्पत्ति का स्थान यह यज्ञ ही है। शतपथ ब्राह्मण [3] के अनुसार समस्त कर्मों में श्रेष्ठ कर्म यज्ञ ही है। अतः पंचमहायज्ञ करने से आत्मोन्नत्ति आदि अवान्तर फल की प्राप्ति होने पर भी 'पंचसूना' दोष से छुटकारा पाने के लिए शास्त्रकारों की आज्ञा है कि गृह्यस्थीयों को प्रतिदिन पंचमहायज्ञ करने चाहिए। [4] जीवनयात्रा में सहज ही हजारों जन्तुओं की प्रतिदिन हिंसा होती है जैसे– चलने–फिरने में, भोजन के प्रत्येक ग्रांस में तथा श्वास–प्रश्वास में जीव की हिंसा अवश्य होती है। अतः इन पापों से मुक्त होने के लिए महामहिमशाली महर्षियों ने पंचमहायज्ञ का विधान बताया है। [5] प्रत्येक गृहस्थ के यहाँ प्रतिदिन चूल्हा, चक्की, बुहारी, ऊखल और जलपान से, यह पांच प्रकार के हिंसा के स्थान है। इनसे होने वाली प्रतिदिन की हिंसा से, निवृत्ति के लिए महर्षियों ने प्रतिदिन पंचमहायज्ञों का विधान किया। [6]

उत्तरकाल में मनुस्मृत्ति में इन्हें क्रमशः प्रहुतः, ब्रह्महुत, प्राशित, हुव तथा आहुत संज्ञायें दी गयी है। [7] शांखायन गृह्यसूत्र के अनुसार इन संज्ञाओं को अन्य अर्थों में प्रयुक्त किया है उसके अनुसार पाकयज्ञ चार प्रकार के होते है– हुत, अहुत, प्रहुत, तथा प्राशित जिनकी व्याख्या में कहा गया है। [8] हुत अग्निहोत्र प्रभृति यज्ञ है। बलिहरण अहुत है, प्रहुत पितृयज्ञ है तथा ब्राह्मण भोजन प्राशित है। आश्वलायन गृह्यसूत्रकार ने इन यज्ञों का स्वतन्त्र रूप से नामकरण किया है [9] तथा इनको प्रतिदिन सम्पन्न करने का विधान है। पारस्कर, मनु तथा याज्ञवल्क्य स्मृतियों में भी इनका उल्लेख किया गया है ये पंचमहायज्ञ क्रम से इस प्रकार है–देवयज्ञ, भूतयज्ञ, पितृयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ तथा मनुष्ययज्ञ। तैत्तिरीयारण्यक में भी इन यज्ञों का उल्लेख प्राप्त होता है। [10]

¼d½ nso;K%& पंचमहायज्ञों में सर्वप्रथम देवयज्ञ है। 'देव' शब्द से तात्पर्य है वह प्रकाश जिसकी आत्मा परिष्कृत है उसके मुख पर एक प्रकार का दिव्य तेज दृष्टिगोचर होता है। इसलिए कहा जाता है कि देवयज्ञ गृहस्थ मनुष्य के आत्मिक विकास के मार्ग में सहायक होता है तथा उसे आत्म साक्षात्कार होता है।

आश्वलायन गृह्यसूत्रकार के अनुसार देवताओं के उद्देश्य से स्वाहा वोषट्, वौषट् शब्दों को कहकर अग्नि में जो आहुतियाँ दी जाती है उसे देवयज्ञ कहते है। [11] इन देवताओं के विषय में गृह्यसूत्रों में मतैक्य नहीं है तथापि ये देवता उल्लिखित हैं– अग्नि, सोम, प्रजापति, धन्वन्तरि, विश्वैदेवा, स्विष्टकृत तथा ब्रह्म। [12] प्रातः काल में सूर्य के साथ प्रजापति को भी आहुति देने का विधान है तथा सांयकाल में अग्नि के साथ भी प्रजापति को आहुति दी जाती है। [13] ये आहुतियाँ धान, यव अथवा तिलों की भी हो सकती है। [14] अग्नि में एक समिधा बिना मन्त्र के डालकर अनुपर्युक्षण करके अग्नि की प्रदक्षिणा करके जल को चारों ओर छिड़क कर जलपात्र को पुनः भर लिया जाता है। [15] इसका सम्पादन केवल एक काष्ठ के टुकड़े से भी हो सकता ळें

^^vgjgnZsoH;% Lokgkdq;kZ{kdk'BLrFkSu nso;K lekIukfrAA** [16]

इस यज्ञ को वैश्वदेव की संज्ञा दी गयी है इस यज्ञ में घर के समस्त देवताओं की आहुति दी जाती

Correspondence
vuh'k dqekj
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग वि. जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।

है। ऐसा पारस्कर गृह्यसूत्र का मत है–

^fo’o lo nork ;L;fr o’onoeUueA** 17

गृह्यसूत्रों के कथनानुसार देवयज्ञ में आहुति आवस्थ्याग्नि के अतिरिक्त लौकिक अग्नि में भी दी जाती है। उसी में देवताओं को आहुति देने का नियम है [18] परन्तु यदि घर में कोई भी अग्नि अर्थात् गार्हपत्य आहवनीय या दक्षिणाग्नि या लौकिक अग्नि न हो तो उस स्थिति में जल अथवा पृथ्वी पर आहुति छोड़ देनी चाहिए। वैश्वदेव या देवयज्ञ में देवताओं को पक्वान अर्पित किया जाता है। यह पवित्र अन्न के हविष्य एवं हविष्य के बने हुये व्यंजनों से मुक्त होता है।

गृह्यसूत्रों के अनुसार देवयज्ञ में देवताओं के निमित्त अग्नि में होम किया जाता है। यह एक प्रकार का अग्निहोत्र कर्म है इसके द्वारा देवताओं को प्रसन्न किया जाता है एवं उनकी प्रसन्नता से गृहस्थ व्यक्ति को मंगलमय अभीष्ट वस्तुओं की प्राप्ति होती है। आत्मिक बल प्राप्त करने के लिए जीवन को यज्ञमय बनाने के लिए देवयज्ञ को दैनिक दिनचर्या का एक आवश्यक अंग माना गया है। श्रीमद्भगवद्गीता में भी भगवान् कहते है कि अपने इष्टदेव की उपासना के लिये परब्रह्मा परमात्मा के निमित्त अग्नि में किये हुए हवन को देवयज्ञ कहते है।

;Rdjksf'k ;n'ukfl ;Ttqgksf'k nnkfl lrA
;Ùkil;fl dkSUrs; rRdq#.o enis.keAA 20

गृह्यसूत्रों में वर्णित देवयज्ञ को करने में जो हवन में प्रयुक्त होने वाली सामग्री में भी ऐसे ही द्रव्य मिश्रित रहते है जो वैधक शास्त्र के अनुसार रोग कीटाणुओं को नष्ट कर वातावरण को निर्मल एवं शुद्ध बनाते है। ऊर्ध्वमुख अग्नि शिखा जीवन को ऊपर ले जाने की प्रेरणा देती है। अतः निःस्वार्थ भाव से यह यज्ञ प्रतिदिन करने का विधान गृह्यसूत्रों में वर्णित है।

¼[k½ fir`;K%& पंचमहायज्ञों में दूसरा यज्ञ पितृयज्ञ है। आश्वलायन गृह्यसूत्र के अनुसार प्राचीनवती होकर पितरों के उद्देश्य से दक्षिण दिशा में 'स्वधा पितृभ्यः' ऐसा कहकर जो प्रदान किया जाता है वह पितृयज्ञ कहलाता है। [21] इस यज्ञ का विधान पितरों की तृप्ति के लिए किया जाता है इसी कारण मनु ने पितरों के तर्पण को पितृयज्ञ कहा है। [22] इसी को श्राद्ध संज्ञा भी दी गयी है। इसका सम्पादन तीन प्रकार से हो सकता है यथा तर्पण प्रतिदिन श्राद्ध एवं बलिहरण से, तर्पण के अन्तर्गत पितरों को स्वधा कहकर जल से तृप्त करके पितृश्राद्ध कर्म के फल की प्राप्ति होती है। [23] इस विषय में पारस्कर का भी यही मत है–

^fir`H;% Lo/kk ue% bfr nf{k.kr%A** 24

शांखायन तथा कौषीतकि दोनों गृह्यसूत्रों में सभी प्राणियों के निमित्त बलिहरण करने के पश्चात् दक्षिण दिशा में

^;s vfXunX/kk ;s vufXunX/kk e/;s fno% Lo/k;k ekn;Ur rsfHk% LojkG lquhfrerka ;Fkko'ka rUoa dYi;UrAA 25

मन्त्र से पितरों के उद्देश्य से बलि देकर क्षोत्रिय ब्राह्मण को भोजन कराने का विधान है। [26] इस विषय में पारस्कर गृह्यसूत्र तथा आपस्तम्भ धर्मसूत्र में तो यहाँ तक कहा गया है कि अन्नाभाव होने पर जल को ही प्रतिदिन पितरों के उद्देश्य से प्रदान करना चाहिए। [27] इस सम्बन्ध में मनु का भी यही मत है। [28] संक्षेप में कहा जा सकता है कि पितरों की तृप्ति के लिए उनके सम्मान के लिए अपनी कृतज्ञता के प्रदर्शन और उनसे उऋण होने के लिए पितृयज्ञ करना नितान्त आवश्यक है।

¼x½ czã;K%& पंचमहायज्ञों के क्रम में तीसरा स्थान ब्रह्मयज्ञ है। गृह्यसूत्रों के अनुसार अपने वेद का अध्ययन करना ही ब्रह्मयज्ञ है। [29] वेदों में कर्मकाण्ड, उपासना काण्ड और ज्ञान काण्ड में ज्ञान की ही प्रधानता है एवं परमावश्यकता बतलायी गयी है। ज्ञान के कारण जीवान्तर की अपेक्षा से मनुष्य–देह उत्तम माना गया है। शास्त्रोक्त सदाचार तथा धर्मानुष्ठान में तत्पर रहना ही मनुष्य की मनुष्यता है और वही मनुष्य वास्तविक मनुष्यत्व का अधिकारी समझा जाता है। इसके बाद धर्मकाण्ड द्वारा अन्तःकरण की शुद्धि हो जाने पर मनुष्य उपासना काण्ड का अधिकारी बनता है, तनन्तर भगवत्कृपा कटाक्ष के लेश में ज्ञान प्राप्त कर मुक्त हो जाता है। [30] बौधायन गृह्यसूत्र के अनुसार गार्हपत्य या औपासन अग्नि के पश्चिम में बैठकर तीन प्राणायाम करके सावित्री का कम से कम दश बार जप करें। आश्वलायन गृह्यसूत्र के अनुसार ग्राम से बाहर पूर्व अथवा उत्तर दिशा में जाकर स्नानादि करके पद्मासन लगाकर वेद मन्त्रों का स्वाध्याय करें। ब्रह्मयज्ञ करने से ज्ञान की वृद्धि होती है। ब्रह्मयज्ञ करने वाला मनुष्य ज्ञानप्रद महर्षिगण का अऋणी एवं कृतज्ञ हो जाता है।

¼?k½ Hkwr;K%& गृह्यसूत्रों में वर्णित काक, कृमि, कीट, पतङ्ग, पशु और पक्षी आदि की सेवा के उद्देश्य से अन्न के द्वारा पृथिवी पर जो बलिहरण किया जाता है उसे 'भूतयज्ञ' कहा गया है। [31] इस यज्ञ में पृथिवी को स्वच्छ करके उसके ऊपर ही प्राणियों के निमित्त बलि प्रदान की जाती है। आश्वलायन, शांखायन तथा कौषीतकि तीनों गृह्यसूत्रों में इस विषय में स्वतन्त्र रूप से उल्लेख है परन्तु वैश्वदेवधर्म में विहित बलिहरण की भाँति ही इसको करने का विधान है।

गृह्यसूत्रों के अनुसार ईश्वर रचित सृष्टि के किसी भी अंग की उपेक्षा कभी नहीं की जा सकती क्योंकि सृष्टि के सिर्फ एक ही अंग की सहायता से समस्त अंगों की सहायता समझी जाती है। अतः 'भूतयज्ञ' भी परम धर्म है। प्रत्येक (मनुष्य) प्राणी अपने सुख के लिए अनेक भूतों को प्रतिदिन क्लेश देता है क्योंकि ऐसा हुए बिना क्षणमात्र भी शरीर यात्रा नहीं चल सकती।

गृह्यसूत्रों के अनुसार प्रत्येक मनुष्य के निःश्वास–प्रश्वास, भोजन प्राशन, विहार–सञ्चार आदि में अगणित जीवों की हिंसा होती है। निरा–निरामिष भोजन करने वाले के भोजन के समय भी अगणित जीवों का प्राण–वियोग होता है। अतः उसके ऋण के निवारण के लिए भूतयज्ञ में बलिदान करना आवश्यक है।

¼³½ vfrfFk ;K%& गृह्यसूत्रों में वर्णित पंचमहायज्ञ का अभिप्राय है अतिथि सत्कार। इसे मनुष्य यज्ञ एवं नृयज्ञ की भी संज्ञा दी गयी है। गृह्यसूत्रों के अनुसार मनुष्यों को भोजन आदि के रूप में जो दिया जाता है वह 'मनुष्ययज्ञ' कहलाता है। [32]

^;Ueuq’;H;ks nnkfr l euq’;;KA** 33

कौषीतकि गृह्यसूत्रों में इस विषय में ऐसा विधान है कि वैश्वदेव तथा बलिहरण कर्म करने के पश्चात् गाय के दुहने में जितना समय लगता है उतने समय तक अतिथि की प्रतीक्षा करनी चाहिए। [34] यदि इस समय के मध्य में अतिथि का आगमन हो जाय तो उसके बैठने के लिए आसन, हाथों और पैरों को धोने के लिए जल देकर भोजन करना चाहिए–

^;|frfFkjkxPNsn ;Fkk kfä ikiekluenUus nÙok ok {kkf=; Hkks t ;srA** 35

बौधायन गृह्यसूत्रकार का भी यही मत है। [36] मार्कण्डेय पुराण में एक मुहुर्त्त के आठवें भाग तक अतिथि की प्रतीक्षा करने के लिए कहा गया है। अतिथि सत्कार के विषय में गृह्यसूत्रों का यह मत है कि उच्छवृत्ति से जीविका चलाने वाले अग्निहोत्री व्यक्ति के गृह्य से भी यदि अतिथि अपूजित होकर चला जाय तो वह उसके द्वारा किये हुए पुण्य को ग्रहण कर लेता है। इतना ही नहीं अपितु पशु, बालक तथा वृद्ध अतिथि भी अपमानित होने पर गृह्यस्थ के समस्त सिद्धियों को भस्म कर देता है।

vfXugk=i cfyoSÜk dky% pkfrfFkjkxrk%A
ckyk'p d|yo)k'p funigUR;iekfurk%AA [37]

इस यज्ञ की महत्ता के विषय में कौषीतकि गृह्यसूत्र में यह कहा गया है कि इस अतिथि यज्ञ को जो प्रतिदिन विधिपूर्वक सम्पन्न करने वाला व्यक्ति सभी पापों से मुक्त होकर स्वर्गलोक में विराजमान होता है। तैत्तिरीयोपनिषद् [38] में 'अतिथि देवो भव' कहकर अतिथि को देवतुल्य माना है। कठोपनिषद् में ब्राह्मण को अग्नि कहा गया है। [39] इस विषय में आपस्तम्ब धर्मसूत्र का कथन है कि अतिथि चाहे प्रिय हो या अप्रिय हो, सत्कार करने पर स्वर्गलोक को पहुँचता है। अतिथि के विषय में मनु का कहना है कि एक रात्रि तक ठहरने वाला ब्राह्मण अतिथि कहलाता है परन्तु एक ग्रामवासी, विचित्र कथाओं एवं परिहासों के द्वारा जीविकोपार्जन करने वाले तथा भार्या और अग्नि से युक्त विप्र को अतिथि नहीं समझना चाहिए। [40] याज्ञवल्क्य के मतानुसार यदि ब्राह्मण आदि कई वर्णों के अतिथि हो तो उनको वर्णक्रम के अनुसार यथाशक्ति भोजन देकर मधुर, वचन, भूमि, तृण तथा जल से सत्कार करना चाहिए। [41] इस प्रकार अतिथि यज्ञ ऐसा यज्ञ है जिसका पुण्य अग्नि से हवन करने से भी अधिक होता है। अतिथि के घर आने पर उसको जो–जो पदार्थ दिये जाते है वे मानो यज्ञ के अन्दर प्रयुक्त होने वाले पदार्थों के समान ही है। यथा जो अतिथि की ओर देखता है वह मानो देवयज्ञ को ही देखता है।

अतः पंचमहायज्ञों के विषय का वर्णन करके गृह्यसूत्रों ने यह बताया है कि इन यज्ञों के द्वारा भक्ति, कृतज्ञता, सम्मान, उदारता तथा सहिष्णुता की भावनाओं ने प्राचीन आर्यों को प्रेरित किया। अतः इन पंचमहायज्ञों के विषय में यह कहा जा सकता है कि ब्रह्मयज्ञ द्वारा गृहस्थ के ज्ञान में वृद्धि होती है और वह ज्ञान पढ़ महर्षिगण का उऋणी और कृतज्ञ बनता है। पितृयज्ञ द्वारा समस्त लोगों की तृप्ति एवं पितरों की पुष्टि होती है। देवयज्ञ द्वारा अग्नि, वायु, आदित्यादि देवों अचेतन दिव्य भौतिक शक्तियों का पूजन और होम द्वारा त्याग की भावना प्रबल होती है। भूतयज्ञ द्वारा सौ आदि पशुओं, पक्षियों तथा अन्य प्राणियों का उपकार करने का अभ्यास होता है। अतिथि यज्ञ करके गृहस्थ परोपकार में नित्य भ्रमण करने वाले साधु संन्यासी को अन्न, वस्त्र, मान से यथावत् सेवा करके उनके आशीर्वाद प्राप्त करता है। इस प्रकार से पंचमहायज्ञों को सम्पन्न करते हुए गृहस्थ ऋषि, पितृ, देव और मनुष्य के जीवन में यज्ञीय भावना का विकास होता है जिससे यह शरीर ब्रह्म प्राप्ति के योग्य बनता है। इन यज्ञों में वह सबको भोग लगाकर अर्थात् खिलाकर पश्चात् स्वयं भोग करने का अधिकारी बनता है। इसीलिए धर्माचार्यों ने इन यज्ञों को वैधानिक मान्यता देकर पंचमहायज्ञ करने वाले व्यक्तियों को स्वार्थपरता से ऊपर उठाकर उनकी आत्मा को शुचि एवं पवित्र बनाया है। जिससे वह अपने शरीर को पवित्र कर उसे उच्चतर कार्यों में संलग्न करके समुन्नति के मार्ग पर अग्रसित होवे तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का पाठ का पृथ्वी के सम्पूर्ण प्राणियों के प्रति दया एवं करूणा का भाव रखें।

गृह्यसूत्रों के अनुसार इन पंचमहायज्ञों को प्रतिदिन करने का निर्देश दिया गया है। जो मनुष्य इन यज्ञों को करता है वह समस्त सुखों को प्राप्त कर के देवलोक को प्राप्त करता है जैसा कि वर्णित भी है–

ÙkrLi¥p egk;Kk orUr ;L; fuR;'k%A

Lk eDr% lo ikiH;k uk di'B egh;rAA [42]

Ikkn fVIi.kh %&

1. मनुस्मृति, २.२८
2. शतपथ ब्राह्मण, १.२.४.५
3. यज्ञो वै श्रेष्ठतमं धर्मः। शतपथ ब्राह्मण, ७.७.४.५
4. पञ्चसूना गृह्यस्थ चुल्ली पेषण्युपस्करः कण्डनी चोदकुम्भबाध्यते यास्तु वाध्यन्। तंसा क्रमेण सर्वासां निष्कृत्यर्थ महर्षिभिः, पञ्च कलृप्ता महायज्ञाः गृहमेधिनाम्।। मनुस्मृति, ३.६८.६७
5. यज्ञ मीमांसा– वेणीराम शर्मा गौड, पृ० २१
6. भूतयज्ञो, मनुष्ययज्ञो, पितृयज्ञो, देवयज्ञो, ब्रह्मयज्ञो।। शतपथ ब्राह्मण, ११.५.५१
7. मनुस्मृति
8. चत्वारः पाकयज्ञाः हुतोऽहुतः प्रहुतः प्रशित इति।। पारस्कर गृह्यसूत्र, १.४.१
9. देवयज्ञो, भूतयज्ञो, पितृयज्ञो, ब्रह्मयज्ञो, मनुष्ययज्ञः इति।। आश्वलायन गृह्यसूत्र, ३.१.२
10. तैत्तिरीय आरण्यक, ११.१0
11. ब्रीहियवैस्तिलसर्पपैरपामार्गैः सदापुष्पीभिरित्युद्वाप्य।। आश्वलायन गृह्यसूत्र, ३.१.३
12. शाण्डिल्य गृह्यसूत्र, २.१४.१४ आश्वलायन गृह्यसूत्र, १.२.१–३ पारस्कर गृह्यसूत्र, २.६.२ बौधायन गृह्यसूत्र, २.८.६
13. आश्वलायन गृह्यसूत्र, ३.७.१–२१ हिरण्यगृह्यसूत्र, १.२३.८–६ पारस्कर गृह्यसूत्र, ६.१.१–४
14. आश्वलायन गृह्यसूत्र, १.६.५.८
15. गोभिल गृह्यसूत्र, १.३.१२
16. पारस्कर गृह्यसूत्र, २.६.१६
17. विश्वे सर्वे देवता यस्येति वेश्वदेवमन्नम्।। पारस्कर गृह्यसूत्र, २.७.२
18. गृह्यानुष्ठानों का सांस्कृतिक अन्वेषण, पृ० ४४१
19. पारस्कर गृह्यसूत्र, २७.२.८ गौतम धर्मसूत्र १.५.६–१५
20. श्रीमद्भगवद्गीता, ६.२७
21. पारस्कर गृह्यसूत्र, २.६.६
22. पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।। मनुस्मृति, ३.७0
23. बौधायन धर्मसूत्र, २.६.११.३
24. पारस्कर गृह्यसूत्र, २.६.६
25. कौषीतकि गृह्यसूत्र, ३.१0.२0–२२
26. शाखांयन गृह्यसूत्र, २.४.१६–२0
27. पारस्कर गृह्यसूत्र, २.६.१६
28. मनुस्मृति, ३.८२
29. यत्स्वाध्यायधीते स ब्रह्मयज्ञो।। आश्वलायन गृह्यसूत्र, ३.१.३
30. यज्ञ मीमांसा, पृ० ३६
31. यद्बलि करोति स भूतयज्ञो।। आश्वलायन गृह्यसूत्र, ३.१.३
32. यज्ञ मीमांसा, पृ० ३५
33. आश्वलायन गृह्यसूत्र, ३.१.३
34. देवर्षिपितृगणेभ्यो दत्त्वातिथिमाकाङ्क्षेद आ गोदोहात्।। कौषीतकि गृह्यसूत्र, ३.१0.२१
35. कौषीतकि गृह्यसूत्र, ३.१0.२२
36. बौधायन गृह्यसूत्र, २.६.१–३ मा० पु०, २६.२४–२५
37. शाखांयन गृह्यसूत्र, २.१६.४
38. तैत्तिरीय उपनिषद्, १.११.२
39. कठोपनिषद्, १.७
40. मनुस्मृति, ३.१0२–१0३
41. याज्ञवल्क्य स्मृति, १.१0७
42. कौषीतकि गृह्यसूत्र, १.३.१0–३५